P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका

किरन गर्ग
सहायक अध्यापक,
बी०एड०विभाग,
दिगम्बर जैन कॉलिज,
बड़ौत, बागपत

सारांश

"मूल्य है मनुष्य के आधार स्तम्भ,
सही पथ पर जीवन यात्रा करें आरम्भ।"

मानवीय जीवन में मूल्यों का बहुत महत्व है उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से जुड़ा होता है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से समझने लगता है। साथ ही शनैः–शनैः अपने अन्तर में ग्रहण करने लगता है। अच्छे वातावरण में बड़ा होकर जहाँ भी उच्च नैतिक मूल्य जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते हें वह उन्हें स्वयं आत्मसात् कर लेता हैं। अन्यथा या तो वह किन्हीं भी मूल्यों को ग्रहण नहीं कर पाता अथवा निम्न श्रेणी के मूल्यों को अपने जीवन का आधार बना लेता है। मूल्यों की मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धरित करने में और उन्हें आत्मसात करने में शिक्षा का विशेष योगदान है। अज्ञानता से हटेगा आवरण, जब होगा मूल्यों का अकुंरण।

मुख्य शब्द : मूल्य, शिक्षा, लक्ष्य, जागरूकता, गुण, मापदण्ड।

प्रस्तावना

"कर्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान, शिक्षा से ही मिल सकता है, सर्वोपरि सम्मान।"

मूल्य वह है, जिसकी प्राप्ति हेतु व्यक्ति और समाज चेष्ठा करते हैं, जिसकी प्राप्ति हेतु वह जीवित रहते हैं और बड़े से बड़ा त्याग कर सकते हैं। नीतिशास्त्र मूल्यों की गुणात्मक व्याख्या करता है। अर्बन के शब्दों में, "मूल्य वह है जो मानव–इच्छा की पूर्ति करता है।" मूल्य रुचि से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। जिस व्यक्ति, समाज अथवा समूह की जिस वस्तु में रुचि होती है वही उसे मूल्यवान प्रतीत होती है। मूल्य वह शब्द है जो सामान्य भाषा में उन वस्तुओं पर लागू होता है जो पसन्द कहलाने वाले सम्बन्ध में बाहरी सिरे पर स्थित है। रुचि की विषय–वस्तु तथा स्वभाव मूल्यवान होता है। रूचि से परिपूर्ण कोई भी वस्तु या कार्य, चाहे वह कोई भी हो, एक लक्ष्य बन जाती है। मुनष्य के अनुभव में मूल्य व्याप्त हैं। हमारे समस्त सुख–दुःख, राग–द्वेष, शुभ–अशुभ विषयक निर्णय मूल्यों पर आधारित हैं। निर्णय करने के प्रायः समस्त मापदण्ड यथार्थ में मूल्यों के मापदण्ड हैं।

इस प्रकार मूल्य की प्रकृति सन्तुष्टि के आधार पर मापदण्ड पर निर्भर होती है। मूल्य की परिस्थिति में कोई भी वस्तु, सम्पत्ति, वाक्य, क्रिया इत्यादि मूल्यवान अथवा मूल्य ही हो सकती है, क्योंकि मूल्य का निश्चय मूल्य की परिस्थितियों में होता है। इन परिस्थितियों में मूल्यात्मक निर्णय दिये जाते हैं। यह मूल्यात्मक निर्णय मूल्य की प्रकृति प्रकट करते हैं। "मानव मूल्यों पर करें विचार, खुशी समाहित अपरम्पार, शुद्ध करें जो आचार, अपनाकर इनकों बनें महान।"

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार, 19 फ़रवरी 2018 को प्रकाशित समाचार– "वर्तमान शिक्षा प्रणाली यह सुनिश्चित करेगी कि 18 साल की शिक्षा उच्च गुणवत्ता वाले तकनीकी, व्यासायिक और अकादमिक मार्गो के बीच युवाओं को वास्तविक मूल्य से परिपूर्ण विकल्प दे रही हैं।"

कैप्लान के शब्दों में, 16 फ़रवरी 2018 के आंकड़े जो मूल्यों की एक छत पर आधारित हैं, उनका तर्क है कि शिक्षा का मूल्य और विशेष रूप से अधिक उन्नत डिग्री हमें बेहतर नागरिक, विचारक और श्रमिक बनने में मदद करने से नहीं, बल्कि शैक्षणिक संकेत के रूप में माना जाता हैं ।

मूल्य तथा शिक्षा:

मूल्य शिक्षा परिप्रेक्ष्य तथा विचार विमर्श संलिप्त होते हैं–

1. **परिपेक्ष्य मूल्य** से अभिप्राय उन प्राथमिकताओं की तालिका हैं जो एक व्यक्ति दैनिक कार्य में अपनाता है। यह मूल्य सम्बन्धी श्रेणीबद्धता का निर्माण है। मूल्य शिक्षा प्रदान करने से एक ऐसी श्रेणी का निर्माण होता है जो कि उच्च मूल्यों से निम्न मूल्यों की ओर होती है। इस श्रेणी के अनुसार ही मूल्य

2. निर्धारित करते हैं तथा उनकी शिक्षा देते हैं। जैसे वर्तमान में सोशल मीडिया से प्रसारित होने वाले संदेश।
3. **विचार–विमर्श मूल्यों** एक चुनाव करने की प्रक्रिया है। यह अर्जित ज्ञान का प्रयोग करता है, इसमें ज्ञान, तथ्य व मूल्य का होता है। मूल्य शिक्षा का प्रमुख कार्य विचार–विमर्श, निर्णय करने, मूल्यांकन करने व आलोचना करने की कलाओं की ज्ञान प्राप्त करने की विधियों के मध्य सामंजस्य की स्थापना करती है। अर्थात् मूल्य शिक्षा देने में ज्ञान प्राप्त करते समय छात्रों को विचार–विमर्श आदि की कलायें भी सिखाई जाती हैं। ज्ञान प्राप्त करना परीक्षण परिणाम है जबकि इसका प्रयोग करना अधिकतर जीवन का परिणाम हैं। विद्यालय को अपने शिक्षण के क्षेत्र में इस प्रकार के कार्यों को सम्मिलित करना चाहिये जो कि परीक्षण परिणाम हो सकते हैं। उस समय हमें विश्वास हो सकता है कि विद्यालय की सफलता जीवन में सफलता को प्रोत्साहित करेगी। किन मूल्यों को उच्च श्रेणी में रखे तथा किनको निम्न श्रेणी में अनेक विषयों के स्रोत से निर्धारित किया जा सकता है।

मूल्य निर्धारित शिक्षा

हमारे देश में मूल्य निर्धारण शिक्षा पर अब बल दिया जा रहा है। मूल्य शिक्षा तथा मूल्य निर्धारित शिक्षा के मध्य अन्तर है। मूल्य शिक्षा विद्यालयी शिक्षा तक सीमित है। इसके विपरीत मूल्य निर्धारित शिक्षा जीवन पर चलने वाली शिक्षा है। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें, और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही सच्ची शिक्षा होती है।

मूल्यों के प्रकार

वर्तमान परिदृश्य में मूल्यों को विभिन्न वर्गो में विभक्त किया है। मूल्यों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं–

आन्तरिक मूल्य तथा बाह्य मूल्य

आन्तरिक मूल्य

एक आन्तरिक मूल्य स्वयं अपने कारण मूल्यवान हैं, एक साधन मूल्य अपने परिणाम के कारण मूल्यवान हैं। आन्तरिक मूल्य के उदाहरण हैं– सत्यम् शिवम् सुन्दरम् इत्यादि। ये स्वयं साध्य हैं। ये अन्य वस्तु की प्राप्ति के साधन नहीं हैं। ये व्यक्ति से उच्च नहीं हैं। व्यक्तियों के द्वारा प्राप्त किये जाने पर भी उनसे स्वतन्त्र हैं। किसी न किसी रूप में व्यक्ति इनसे आध्यात्मिक सन्तोष प्राप्त करता है। आन्तरिक मूल्य हमें नैतिक सदाचार की ओर ले जाता है।

कुछ दार्शनिकों के अनुसार विश्व में यथार्थ में आन्तरिक मूल्य उदाहरणार्थ सच्चिदानन्द निर्णय ब्रह्म ही है। कतिपय अन्य दार्शनिकों के अनुसार जगत् में केवल सहायक मूल्य ही हैं। आन्तरिक मूल्य विश्व में नही है। वे केवल भटकते हुए दार्शनिक की कल्पनायें मात्र हैं। प्रश्न यह है कि आन्तरिक मूल्य व्यक्ति में है या वस्तु में। इस सम्बन्ध में दो मुख्य दृष्टिकोण हैं–

(अ) मूल्यात्मक आत्मवादी दृष्टिकोण किसी भी वस्तु का आन्तरिक मूल्य, मूल्य के निर्णायक व्यक्ति पर आधारित है। पार्कर ने कहा है कि, 'मूल्य पूर्णतया आन्तरिक जगत, मनस से सम्बन्ध रखते हैं' इच्छा पर ही मूल्य आधारित हैं। मूल्य का स्वयं में कोई अस्तित्व नहीं है, जब तक उसमें इच्छा की पूर्ति न हो। यदि इच्छायें न हों तो मूल्य सम्भव नहीं है। सुखवादी दार्शनिकों के अनुसार मूल्य सुख के अनुभव पर आधारित हैं। शरीर के सुख, दुःख ही मूल्य के निर्णायक हैं। अन्य दार्शनिकों ने इस सुखवादी मत का खण्ड किया है तथा सिद्ध किया है कि सुख को मूल्य की आन्तरित कसौटी नहीं स्वीकार किया जा सकता है। ज्ञानशास्त्र के आधार पर कतिपय दार्शनिक आन्तरिक मूल्यों को मानसिक मानतें हैं। उनके मतानुसार आन्तरिक मूल्य ज्ञाता के ऊपर अवलम्बित हैं। अध्यात्मवादी तो मूल्यों को मानसिक बताते हैं, कपितय भौतिकवादी ऐसे भी हैं जो इन मूल्यों को मानसिक मानते हैं। उनके मतानुसार मूल्य एक प्रकार का अनुभव है, वह कोई वस्तु अथवा पदार्थ नहीं हैं।

वस्तुवादी सिद्धान्त

मूल्य को आन्तरिक मानने वाले दार्शनिकों में कुछ विचार वस्तुवादी हैं। वस्तुवादियों के अनुसार, कोई भी वस्तु मूल्यवान है यदि वह मूल्यवान प्रतीत होती है। यथार्थवादियों के अनुसार मूल्य मानसिक नहीं होते। वस्तु उसी समय अच्छी लगेगी जब वह मूल्यवान होगी। अतएव मूल्य ज्ञान या दृष्टा में न होकर वस्तु में होते हैं। प्लेटों के वस्तुवाद के सिद्धान्त के अनुसार, ''किसी वस्तु में मूल्य उस सीमा तक निहित होता है जिस सीमा तक वह वस्तु अपने आदर्श प्रत्यय की अभिव्यक्ति करती हैं।'' 'शुभ' एक सामान्य तथा अन्तिम तत्व अथवा सत्ता है जो प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के पूर्व मे स्थित है तथा उससे जगत की समस्त शुभ वस्तुयें निकलती हैं। यह शुभ एक महान तत्व है, तथा जगत के समस्त शुभ इसके प्रतिबिम्ब हैं। इस शुभ का अस्तित्व मनुष्यों के अनुभव पर आधरित नहीं है, वरन मनुष्यों को जो शुभ का अनुभव होता है वह इसी अन्ततम शुभ के प्रकार के कारण होता है। कतिपय अन्य वस्तुवादियों का मत है कि मूल्य विशेष वस्तुओं का गुण होता है। अतः वह व्यक्ति पर निर्भर नहीं होता। दूसरी ओर मध्य मार्गीय यथार्थवादी मानते है कि मूल्य वस्तु अथवा पदार्थ में होता है पर उसमें इस प्रकार की योग्यता होती है जिसके कारण अनुभवकर्ता के मन में यह धारणा हो जाती है कि अमुक वस्तु मूल्यवान है अथवा अमूल्यवान।

बाह्य मूल्य

बाह्य मूल्य वे हैं जो किसी अन्य लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधन मात्र है। उदाहरणार्थ धन सम्पत्ति बाह्य मूल्य माने जाते हैं, क्योंकि उनका स्वयं में कोई मूल्य नहीं है। वे मूल्यवान इस कारण हैं कि हम उनसे भिन्न–भिन्न प्रकार की वस्तुऐं क्रय कर सकते हैं। अनुभव आधारित तथ्य यह कहते हैं कि वस्तुतः मूल्यों का आन्तरिक और बाह्य वर्गों में विभक्त करना सम्भव नहीं है। सामान्य जीवन में हमारा अनुभव है कि जो वस्तु एक व्यक्ति के लिये आन्तरिक मूल्य रखती है, वही दूसरे के लिए बाह्य मूल्य रख सकती हैं उदाहरणार्थ कृपण के लिये धन स्वयं साध्य है जबकि अन्य व्यक्तियों के लिए वह साधन मात्र है। निःसन्देह अधिकाशंतः दार्शनिक और सामान्य व्यक्ति

भी सत्य, शुभ और सौन्दर्य को अन्तिम मूल्य मानते हैं। तथापि देशकाल में इस सम्बन्ध में कतिपय अपवाद भी मिलते हैं। उदाहरणार्थ प्लेटों के काल में सौन्दर्य को शुभ के मार्ग में बाधक माना जाता था। धर्म के इतिहास का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि अनेक कालों में धार्मिक विचारों के समक्ष शुभाशुभ की अवहेलना की गई। भारतवर्ष में वाममार्गी योगियों में ऐसी अनेक अनैतिक क्रियाएं थीं जो सामान्य व्यक्ति के अनुसार ही महा अनुचित थीं, परन्तु वाममार्गी योगी धार्मिक व्याख्या करके उनको उचित ठहराते थे।

द्वितीय वर्गीकरण–साधन मूल्य तथा परम मूल्य

साधन मूल्य

साधन मूल्य वे हैं जो परम मूल्य की ओर अग्रसर करते हैं, जैसे– धन, खेलकूद, व्यायाम और भोजन इत्यादि जीव रक्षा के साधन होने के कारण साधन मूल्य हैं। सम्मान और अधिकार इत्यादि भी जीवन में सहायक होने के कारण साधन मूल्य हैं।

परम मूल्य

परम मूल्य नैतिक मूल्य हैं। वह स्वयं शुभ हैं। न्याय और सत्य साधन न होकर स्वयं साध्य हैं। ये नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्य स्वयंभू होते हैं। इनमें नैतिक शुभ परम मूल्य माना जाता है। यह शुभ व्यक्ति के द्वारा प्राप्त होने पर भी सार्वभौम मूल्य हैं। मूल्यों की श्रेणी में विभिन्न मूल्यों को उचित स्थान प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ दैहिक मूल्य के ऊपर मानसिक मूल्य और मानसिक मूल्य के ऊपर, आध्यात्मिक मूल्य माने जाते हैं। मूल्यों का चयन करते समय सदैव निम्न से उच्च और बाह्य से आन्तरिक मूल्य साधन से साध्य मूल्य अपनाने चाहियें। मूल्यों में परिमाणात्मक नहीं बल्कि गुणात्मक अन्तर होता है।

तृतीय वर्गीगरण–स्थायी मूल्य तथा अस्थायी मूल्य

अस्थायी मूल्य

अस्थायी मूल्य साधन मूल्य तथा बाह्य मूल्य हैं। इसके उदाहरण धन सम्पत्ति आदि माने जाते हैं।

स्थायी मूल्य

स्थायी मूल्य आन्तरिक मूल्य तथा साध्य मूल्य है। इसका महत्व स्थायी है, ये सत्य पर आधारित होते हैं।

स्थायी मूल्य तथा अस्थायी मूल्य की तुलना–स्थायी मूल्य का महत्व प्रत्येक परिस्थिति मं एक–सा रहता है। इसके विपरीत अस्थायी काल के साथ परिवर्तित होते रहते हैं। स्थायी मूल्यों में इस प्रकार परिवर्तन नहीं होता। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपनी चेतना के स्तर के अनुसार विभिन्न वस्तुओं को मूल्यवान समझता है। समस्त मूल्य सपरिणाम हैं, अर्थात् प्रत्येक मूल्य को तोलकर मूल्यों के स्तर में उसका स्थान निर्धारित किया जा सकता है, अतः नैतिक मूल्य स्थायी, अनुपम और अपूर्व हैं। वे अन्य मूल्यों के समान परिणाम नहीं हैं। उनके ज्ञान के कर्तव्य, बुद्धि अथवा नैतिक बाध्यता होती है। उनके साथ नैतिक भावनायें संलग्न रहती हैं, ये नैतिक मूल्य हैं।

आत्म साक्षात्मकार

सत्य, सौन्दर्य और शुभ ये तीनों मिलकर आत्म साक्षात्कार पर परम मूल्य निर्धारित करते हैं। आत्म साक्षात्कार स्थायी परम मूल्य हैं। इसमें अन्य सभी अस्थायी, बाह्य और साधन मूल्यों को उचित स्थान प्रदान किया गया है।

मूल्य निर्धारित शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान समाज मं मूल्यों के मूल्य में निम्न कारणों से गिरावट आ गयी है–

1. आधुनिक जीवन की जटिलता के कारण हमारे जीवन में अनेक दबाव हैं जो तनाव देते हैं। व्यक्ति तनावों को कम करने का प्रयास करता है जिसके लिए चाहे उसे समाज में अनुचित काम करने हों। जैसे हमें टी. वी. फ्रिज, स्कूटर चाहिय अगर हमारी आमदनी कम है तो हम रिश्वत लेंगे। हम अपने आर्थिक लाभ को सर्वापरित और ईमानदारी को नीचे रखते हैं। मूल्य शिक्षा की आवश्यकता इस कारण है कि हम उस मूल्य शिक्षा की प्राथमिकता देना सीखें जो मानव कल्याण के दृष्टिकोण से अधिक मूल्यवान हैं।
2. वर्तमान काल में धर्म के सम्बन्ध में विचत्र धारणायें हैं। या तो धर्म की मान्यता लगभग समाप्त हो गई है अथवा वह केवल औपचारिकता हैं। मूल्य निर्धारित शिक्षा अच्दे मूल्यों की प्राप्ति करके छात्रों द्वारा ग्रहण करने को प्रोत्साहित करती है। मूल्य निर्धारित शिक्षा के बारे में एक वर्किंग ग्रुप ने शिक्षकां के प्रशिक्षण सम्बन्धी रिपोर्ट सन् 1983 में प्रस्तुत की। यह ग्रुप शिक्षा मंत्रालय के माध्यम से नियुक्त हुआ था। इसक अनुसार मूल्य निर्धारित शिक्षा को ऐसी शिक्षा माननी चाहिये जो शोभनीय व आत्म उन्नति की ओर होगी। यह मूल्य के बारे में लोगों को सूचना देगी, वरन् उनके व्यक्तित्व को विकसित करने की ओर होगी और संकीर्णता स्वार्थता व अनुपयुक्त विचारों तथा अभिवृत्तियों से ऊपर उठायेगी।

   ऐसी शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य मूल्यों का निर्धारण है। यह शिक्षा नैतिक व आध्यात्मिक विभेद को प्रकट करेगी तथा आध्यात्मिक एवं धार्मिक के मध्य अन्तर को बतायेगी। सीखने की प्रक्रिया का स्वयं में बहुत बड़ा प्रभाव बालकों के मूल निरुपण पर पड़ता है। विद्यालय की समस्त क्रियाओं पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन इत्यादि की संरचना इस प्रकार से होनी चाहिये कि वह स्वतः वांछित मूल्यों के विकास की ओर ले जायें।

इस सम्बन्ध में प्रमुख सुझाव निम्न प्रकार हैः–

1. विद्यालय सब शिक्षकों को मूल्य शिक्षा का शिक्षक स्वीकार करें।
2. सभी विषयों को शारीरिक शिक्षा सहित वांछित मूल्यों को छात्रों को सिखाने के लिए प्रयोग करना चाहिए।
3. मूल्य शिक्षा के कार्यक्रम में एकीकरण कृत उपगमन को लिया जाए।
4. एक मूल्य शिक्षा सम्बन्धी साहित्य के साधन केन्द्र की स्थापना की जाए।
5. राज्य स्तर पर विशेष शिक्षक उन्मुख कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये जिसमें प्रभावशाली मूल्यों के विकास की विधियों को सिखाने हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षित करना चाहिए।
6. एक राष्ट्रीय अनुशासन समिति होनी चाहिए, जिसकी सदस्यता ऐसे व्यक्तियों को प्राप्त हो जोकि अपने

स्वयं की प्रतिष्ठा के कारण नैतिक प्रभुत्व रखते हों तथा जो मूल्य शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों के विकास का पथ–प्रदर्शन कर सकें।

बढ़ती साक्षरता दर और शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त भी अपराध दर नीचे आने से इंकार कर रही है। समाज में अपराध, हिंसा और अन्य विनाशकारी गतिविधियों में वृद्धि मूल्यों के खराब परिसंचरण के लिये निर्धारित की जा सकती है। कुछ सामाजिक समस्याओं का निवारण स्वतः हो जायेगा, यदि स्कूली जीवन में मानव चरित्र के मूल्यों को अच्छी तरह से पढ़ाया जाये। समय की आवश्यकता मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करता है। तनाव, धैर्य, ईमानदारी, सहिष्णुता, सहानुभूति और परस्पर सामंजस्य जैसे मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में रखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। युवाओं को न केवल अपने कौशल, प्रतिभा और क्षमताओं को विकसित करने के लिए सिखाया जाना चाहिए, उन्हें भी कल्याण, और सभी के सुधार के लिए इन कौशल, प्रतिभा और क्षमताओं का उपयोग करना सिखाया जाना चाहिए। अधिकतर एक बार यदि मूल्य जीवन में हर किसी की प्राथमिकता बन जाते हैं तो जीवन के सभी नकारात्मक पहलू स्वतः ही कम हो जायेंगे। ''जीवन की हर घड़ी में, आवश्यक है यह बात, सत्यता जीवन में हो, और ज्ञान, मूल्य हो साथ।''

निष्कर्ष

किसी भी मानव के जीवन में मूल्यों का अहम् योगदान होता है, क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा–बुरा या सही गलत की परख की जाती है। परिवार, समाज और स्कूल के अनुरुप ही व्यक्ति में सामाजिक गुणों एवं मानव मूल्यों का विकास होता है। प्राचीन काल में भारत की पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा भी जरूरी होती है, लेकिन आज वैश्वीकरण के इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा की सक्रियता निरन्तर धटती जा रही है। वर्तमान में नई दिल्ली स्थित एन.सी.ई.आर.टी. ने वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक मूल्यों की सूची तैयार की हैं लेकिन यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिन मूल्यों की बात पाठ्यपुस्तक करती है उनका उपयोग शिक्षक स्कूल में कैसे कर रहा है, आमतौर पर शिक्षक छात्रों को पाठ पढ़ाना ही अपना नैतिक दायित्व समझते हैं और छात्र के व्यवहार में मूल्यगत बदलाव पर कम ध्यान देते हैं जबकि शिक्षक जब तक अपने आपको कार्य की कसौटी पर रख कर नहीं सोचेगा, तब तक वह न तो अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है तथा न हीं छात्रों में मूल्यों के प्रति आस्था विकसित कर सकता है। ज्ञान–विज्ञान की सभी बातें, निष्फल हैं यदि मूल्यों को गृहण न करे पाते। ''शिक्षा स्वतन्त्रता के स्वर्ण द्वार खोलने की कुंजी है जिसका उद्देश्य एक खाली दिमाग को खुले दिमाग में परिवर्तित करना है। शिक्षा की जड़ कड़वी है पर उसके फल मीठे हैं। शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे आप दुनिया बदलने के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं, इसलिए बच्चों को ये सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोंचे, न कि क्या सोचें? बुद्धि और चरित्र–यही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *जनसत्ता–नई दिल्ली, नवम्बर, 15, (2015)*
2. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) जीवन का मूल्य*
3. *भारतीय शिक्षा (जर्नल) दिसम्बर 12, (2009), मूल्यों की शिक्षा*
4. *सोनी वार्ष्णेय (2014), मूल्य मनुष्यता की पहचान है–'नवनीत'*
5. *संजीव वोट (2017), 28 जनवरी– मूल्य मीमांसा (पन्ने का इतिहास)*
6. *अनंत गीते, पल–पल इंडिया–जबलपुर–9 अगस्त (2018)–''मानवीय मूल्यों पर ही आधारित है भारतीय संस्कृति''।*
7. *डॉ०राकेश कुमार मौर्य, (2014) वैल्यू एजूकेशन रोपर–पंजाब*
8. *टेलर, एम०(2006), द डेवलपमैन्ट ऑ वल्यूज थ्रू द स्कूल कैरीक्यूलम।*
9. *थार्नवर्ग, आर० (2009) द मोरल कन्स्ट्रैक्शन स्कूल रूल्स, एजूकेशन, सिटीजनशिप एण्ड सोशियल जस्टिस, 4, 245–6।*
10. *थार्न वर्ग, आर० (2010), टीचिंग एण्ड टीचर एजूकेशन।*
11. *संतोष कुमार बी (2018), वैल्यू एजूकेशन चेन्नई।*
12. *रश्मि चतुर्वेदी, डा0 हेमन्त खण्डाई (2017) वैल्यू एजूकेशन,, ए0पी0एच0 पब्लिशिंग हाऊस, Sapnaonline.com*
13. *प्रो०प्रसाद कृष्ण (2017), –एजूकेशन इन वैल्यूम–स्ट्रेटीज एण्ड चैलेंजीज फॉर एज्यूकेशन–कालिकट। (2017)*
14. *http://www.jvbhardi.org/kjva.aspx*